संजीवनी पब्लिक स्कूल विषय: हिन्दी
कक्षा: दसवीं दत्त कार्य

अभ्यास - 6

पुस्तक: क्षितिज : गद्य खण्ड
पाठ: 10 नेता जी का चश्मा गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर 2×3=6

1. हालदार साहब - - - - - - - हिस्से के बारे में।

प्रश्न 1. कस्बा किस प्रकार का था ?
उत्तर 1. कस्बा सामान्य सा था। वह कोई बड़ा नहीं था। वहाँ कुछ पक्के मकान थे, एक बाजार था। कस्बे में एक लड़कों का तथा एक लड़कियों का स्कूल था। वहाँ एक सीमेंट का कारखाना, एक सिनेमा घर तथा एक नगरपालिका भी थी।
प्रश्न 2. नगरपालिका क्या-क्या काम करती थी?
उत्तर 2. नगरपालिका कुछ न कुछ करती रहती थी। कभी किसी सड़क को पक्का करवा देती थी, कभी कबूतरों की छतरी बनवा देती थी, तो कभी कवि सम्मेलन करवा देती थी।
प्रश्न 3. मुख्य चौराहे पर किसने किसकी मूर्ति लगवा दी थी ?
उत्तर 3. नगरपालिका के एक उत्साही अधिकारी ने शहर के मुख्य चौराहे पर नेताजी सुभाषचंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगवा दी थी।

2. मूर्ति संगमरमर - - - - - - - - - चश्मा रियल।

प्रश्न 1. मूर्ति किस प्रकार की थी ?
उत्तर 1. नेता जी की मूर्ति संगमरमर की थी। इसे 'बस्ट' कहा जाता है क्योंकि यह टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक थी। नेता जी फौजी वर्दी में बनाए गए थे। मूर्ति सुन्दर लग रही थी।
प्रश्न 2. किस दृष्टि से प्रयास को सराहनीय कहा जा सकता है?
उत्तर 2. मूर्ति को देखते ही नेता जी के दोनो नारे - 'दिल्ली चलो' और 'तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा' याद आने लगते हैं। इस दृष्टि से यह प्रयास सराहनीय था।
प्रश्न 3. नेता जी की मूर्ति में क्या कमी रह गई थी ?
उत्तर नेता जी की मूर्ति की आँखों पर चश्मा नहीं बना था। यह कमी रह गई थी। अब चश्मा संगमरमर की जगह चौड़े काले फ्रेम का लगा दिया गया था।

3. पानवाले के लिए - - - - - - - - - - निकल गया होगा।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 1. मूर्ति के नीचे क्या लिखा था ?
उत्तर 1. मूर्ति के नीचे मूर्ति बनाने वाला का नाम लिखा था – 'मूर्तिकार मास्टर मोतीलाल'। वह कस्बे के स्कूल का ड्राइंग मास्टर था।
प्रश्न 2. मूर्तिकार के सामने क्या समस्या रही होगी ?
उत्तर 2. मूर्तिकार के सामने मूर्ति बनाने की समय-सीमा थी। उसे एक मास में मूर्ति बना कर देनी थी। मूर्ति तो समय पर बन गई थी, पर पत्थर पर पारदर्शी चश्मा बनाने की समस्या उपस्थित हो गई।
प्रश्न 3. मूर्ति की आँखों पर चश्मा न होने के बारे में क्या-क्या अनुमान लगाए गए ?
उत्तर 3. चश्मे के बारे में अनुमान लगाए गए – चश्मे में बारीकी का काम करते समय चश्मा टूट गया होगा। यह भी संभव है कि चश्मा अलग से बनाकर फिट करने के प्रयास में चश्मा निकल गया होगा।

4. हालदार साहब ---- --- -- बैठकर चले गए।

प्रश्न 1. हालदार साहब क्या देखकर अवाक् रह गए ?
उत्तर 1. हालदार साहब ने अपने मन में कैप्टन की जो छवि बना रखी थी, वह उसके बिलकुल विपरीत निकला। वह एक बेहद बूढ़ा मरियल-सा व्यक्ति था जिसने आँखों पर काला चश्मा लगा रखा था, उसके एक हाथ में एक छोटी सी संदूकची थी। तथा दूसरे हाथ में एक बाँस पर टँगे चश्मे थे। उसकी इस दशा को देखकर हालदार साहब अवाक् रह गए थे।
प्रश्न 2. हालदार साहब क्या जानना चाहते थे ?
उत्तर 2. हालदार साहब यह जानना चाहते थे कि इस व्यक्ति को लोग कैप्टन क्यों कहते हैं ? क्या यही इसका वास्तविक नाम है ? वे उसकी हालत के बारे में जानना चाहते थे।
प्रश्न 3. पानवाले की क्या बात हालदार साहब को अच्छी नहीं लगी ?
उत्तर 3. पानवाले द्वारा एक देशभक्त (कैप्टन) का मज़ाक उड़ाया जाना हालदार साहब को अच्छा नहीं लगा।

Scanned with CamScanner

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

उत्तर। सेनानी न होते हुए भी चश्मे वाले को लोग कैप्टन इसलिए कहते थे क्योंकि -

* उसके अन्दर देशभक्ति की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी।
* वह स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाले सेनानियों का भरपूर सम्मान करता था।
* वह नेता जी सुभाषचन्द्र बोस का अत्यधिक सम्मान करता था। उसे नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति आहत करती थी अतः वह मूर्ति पर चश्मा पहनाकर उनके प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करता था।

देश के प्रति उसके समर्पण भाव को देखकर लोग उसे सेनानी मानकर कैप्टन कहते थे।

प्रश्न 2. हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

उत्तर हालदार साहब पहले मायूस इसलिए हो गए थे क्योंकि वे सोच रहें थे कि कैप्टन की मृत्यु हो चुकी है अतः अब नेता जी की मूर्ति को चश्मा पहनाने वाला कोई नहीं होगा। उन्हें लगा कि चौराहे पर मूर्ति होगी परन्तु उस पर चश्मा नहीं होगा?

प्रश्न 3. मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

उत्तर मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि अभी भी लोगों के अन्दर और विशेषकर नई पीढ़ी के अन्दर देशभक्ति की भावना है, अतः हमारा देश सुरक्षित है।

प्रश्न 4. हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे

उत्तर हालदार साहब इसलिए भावुक हो क्योंकि उनकी निराशा की भावना आशा में बदल चुकी थी। उनके हृदय की प्रसन्नता आँखों से आँसू बनकर छलक गई थी। बच्चों की सोच और सोच के अनुरूप कार्य को देखकर हालदार साहब भावुक हो उठे थे।

Scanned with CamScanner

प्रश्न 5. आशय स्पष्ट कीजिए :-
"बार-बार सोचते - - - - - - - - - - - - मौके ढूँढ़ते हैं।"

उत्तर: इस कथन का आशय है कि उस कौम का भविष्य अवश्य अंधकारमय होगा जो देशभक्तों के बलिदानों का मज़ाक उड़ाती है। इन क्रान्तिकारी लोगों ने देश के लोगों के लिए अपनी घर-गृहस्थी की परवाह नहीं की। अपनी पूरी जवानी भरी जिन्दगी देश पर कुर्बान कर दी और लोग उनका सम्मान करने के स्थान पर हँसते हैं तो स्थिति निश्चय ही अपमान जनक है। इनका स्वाभिमान मर चुका है। अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए ये लोग स्वयं को भी बेचने को तैयार हैं।

प्रश्न 6. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फौज में पागल है पागल!"
कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखें।

उत्तर:- हमें लगता है कि पानवाले द्वारा कैप्टन पर की गई यह टिप्पणी सर्वथा अनुचित है। किसी भी व्यक्ति को न तो यह हक होता है और न ही उसे शोभा देता है कि वह किसी की भी शारीरिक अक्षमता का मज़ाक उड़ाए। कैप्टन शारीरिक रूप से भले ही अपंग था, पर वह पक्का देशभक्त था। अतः पानवाले को उसकी भावना का सम्मान करना चाहिए था। वह तो देश के लिए पागल था और ऐसा व्यक्ति सम्मान पाने का हकदार होता है।

प्रश्न 7. सीमा पर तैनात फौजी ही देश-प्रेम का परिचय नहीं देते। हम लोग भी अपने दैनिक कार्यों से देश-प्रेम प्रकट कर सकते हैं। कैसे? (मूल्य परक प्रश्न)

उत्तर:- हम अपने निम्न कार्यों से अपने देश-प्रेम को प्रकट कर सकते हैं :-

* हम अपने सौन्दर्य बोध को बढ़ाएँ। गन्दगी न फैलाएँ।
* अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर उनकी देखभाल करें।
* सर्वशिक्षा अभियान चलाएँ। अधिक से अधिक लोगों को साक्षर बनाएँ।
* शोषित बच्चों को शोषण मुक्त बनाने के लिए प्रयास करें।
* गैरकानूनी कार्य और भ्रष्टाचार को पनपने से रोकें।

* * *

Scanned with CamScanner

संजीवनी पब्लिक स्कूल, विषय: हिन्दी
कक्षा: दसवीं, दत्त कार्य

पुस्तक क्षितिज गद्य खण्ड पाठ-11 बालगोबिन भगत

गद्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर

1. बालगोबिन भगत - - - - - - - - - - - - - - बाँधे रहते।

प्रश्न: बालगोबिन भगत का व्यक्तित्व कैसा था?
उत्तर: बालगोबिन भगत मँझोले कद के थे। उनका रंग गोरा-चिट्टा था। उनकी आयु साठ वर्ष की थी। उनके बाल पक गए थे। वे दाढ़ी और जटाजूट नहीं रखते थे।

प्रश्न: वे क्या-क्या वस्त्र पहनते थे?
उत्तर: बालगोबिन भगत वस्त्र बहुत कम पहनते थे। उनकी कमर में एक लंगोटी रहती थी। उनके सिर पर एक कबीर पंथी कनफटी टोपी रहती थी। वे सर्दियों में काला कम्बल ओढ़ लेते थे।

प्रश्न: भगत कैसा टीका लगाते थे?
उत्तर: भगत अपने माथे पर रामानंदी चंदन का तिलक लगाते थे। जो नाक के एक छोर से शुरू होता है।

2. किन्तु खेतीबारी करते, - - - - - - - - गुजर चलाते।

प्रश्न: बालगोबिन भगत गृहस्थ थे या साधु?
उत्तर: बालगोबिन भगत गृहस्थ हो भी एक सच्चे साधु थे। वे साधु की सभी परिभाषाओं पर खरे उतरते थे।

प्रश्न: गद्यांश के आधार पर बताओ कि वे एक सच्चे कबीरपंथी थे।
उत्तर: गद्यांश के आधार पर बालगोबिन भगत एक सच्चे कबीरपंथी थे। वे कबीर को अपना साहब मानते थे। वे कबीर के बताए रास्ते पर ही चलते थे। वे कभी झूठ नहीं बोलते थे तथा सभी के साथ खरा व्यवहार रखते थे। वे किसी से झगड़ा मोल नहीं लेते थे। और किसी की चीज को छूते तक नहीं थे।

प्रश्न: वे खेत की पैदावार का क्या करते थे?
उत्तर:- भगत के खेत में जो भी अन्न पैदा होता, उसे सिर पर लाद कर साहब के दरबार (कबीरपंथी मठ) में ले जाते थे। वहाँ कुछ अन्न भेंट स्वरूप रख लिया जाता था। शेष अन्न को प्रसाद स्वरूप मानकर घर ले आते और उसी से अपना गुजर चलाते थे।

Scanned with CamScanner

3. गर्मियों में उनकी ---------- ओत-प्रोत है।

प्रश्न: गर्मियों की संध्या के समय बालगोबिन भगत के घर के आँगन में क्या कार्यक्रम चलता था?

उत्तर: गर्मियों की संध्या के समय भगत के घर में संगीत की एक महफ़िल जमती थी। गाँव के कुछ प्रेमी आ जुटते थे। खँजड़ी और करताल बजने लगती थीं और भगत के पद को सारी मंडली दोहराती-तिहराती थी।

प्रश्न: उस वातावरण का भगत और भक्तों पर क्या प्रभाव देखा जाता था।

उत्तर: भगत के घर के आँगन में एक मनमोहक वातावरण उपस्थित हो जाता था कि भक्त और श्रोता भाव-विभोर हो उठते थे। धीरे-धीरे तन पर मन हावी होने लगता था। बीच में भगत खँजड़ी ले कर नाचने लगते। उनके साथ और लोग भी नाचने लगते थे।

प्रश्न: सारा आँगन कैसा हो उठता था?

उत्तर: उस समय भगत के घर का आँगन संगीत से ओत-प्रोत हो उठता था।

अभ्यास प्रश्नोत्तर:-

प्रश्न: भगत ने अपने बेटे की मृत्यु पर अपनी भावनाएँ किस प्रकार व्यक्त की?

उत्तर:- जब भगत का एकमात्र पुत्र मरा तो भगत ने उसे आँगन में एक चटाई पर लिटाया और देह को एक सफ़ेद कपड़े से ढक दिया। कुछ फूल और तुलसीदल उसके ऊपर बिखेर दिए। उसके सिरहाने एक दीपक जला दिया। फिर पास जमीन पर आसन बिछा कर बैठ गए और अपने पुराने स्वर में तल्लीनता के साथ गाते रहे। बीच-बीच में वे रोती पुत्रवधू को समझाते कि यह रोने का समय नहीं उत्सव मानने का समय है। उनका मानना था कि आत्मा परमात्मा के पास चली गई है। बिरहनी आत्मा अपने प्रेम ईश्वर से मिल चुकी है। इससे बढ़कर आनंद की कोई बात नहीं हो सकती।

प्रश्न: भगत की पुत्रवधू उन्हें अकेले छोड़कर जाना क्यों नहीं चाहती थी?

Scanned with CamScanner

उत्तर: अपने पुत्र की आकस्मिक मृत्यु के बाद अपनी पुत्रवधू को भगत ने उसके भाई के साथ जाने और पुनर्विवाह का आदेश दिया। परन्तु भगत की पुत्रवधू उन्हे छोड़कर जाना नहीं चाहती थी क्योंकि -

* पुत्र की मृत्यु के बाद वे अकेले पड़ गए थे।
* उसे चिंता थी कि भगत का भोजन कौन बनाएगा।
* बीमार पड़ने पर कौन उन्हे दवा देगा?
* उन्हे पानी देने वाला कोई नहीं होगा।
* वह अपने बूढ़े ससुर की सेवा करना चाहती थी।

प्रश्न: बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: बालगोबिन भगत के मधुर गायन की विशेषताएँ निम्न हैं:-

* वे कबीर द्वारा रचित ईश्वर भक्ति के गीत गाया करते थे।
* स्वरों की ताजगी उनके गीतो की प्रमुख विशेषता थी।
* भगत के गायन में एक निश्चित ताल और गति होती थी।
* उनका मधुर गायन ऐसा लगता था कि जैसे वे एक-एक शब्द को संगीत के जीने पर चढ़ाकर कुछ को स्वर्ग की ओर भेज रहें हैं और कुछ को पृथ्वी पर खड़े लोगो के कानों की ओर।

प्रश्न: पाठ के आधार पर उन प्रसगों का वर्णन कीजिए, जिसमें बालगोबिन भगत सामाजिक मान्यताओं का विरोध करते हैं।

उत्तर: यह सच है कि बालगोबिन भगत प्रचलित सामाजिक मान्यताओं को नहीं मानते थे। पाठ के आधार पर ऐसे प्रसंग निम्न हैं:-

* भगत के पुत्र की मृत्यु हो गई थी। उन्होने प्रचलित सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप पुत्र का क्रिया-कर्म नहीं किया। उन्होने कोई कर्मकांड नहीं किया।
* पुत्र की चिता को मुखाग्नि किसी पुरुष से न दिलाकर अपनी पुत्र वधू से करवाई। जो कि सामाजिक मान्यता के विपरीत था।
* उस समय हमारे समाज में विधवा-विवाह की मान्यता नहीं थी, पर बालगोबिन भगत ने अपनी पुत्रवधू के पुनर्विवाह करने का आदेश दिया।
* वे मृत्यु को शोक मनाने का अवसर न मानकर आनंद मनाने का अवसर मानते थे। क्योंकि उनके अनुसार मृत्यु आत्मा-परमात्मा के मिलन का अवसर होता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न: आपकी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के क्या कारण रहे होंगे?

उत्तर: हमारी दृष्टि में भगत की कबीर पर श्रद्धा के निम्न कारण रहे होंगे-

* उनकी अपनी विचारधारा कबीर की विचारधारा से मेल खाती थी।
* कबीर का आडम्बर रहित जीवन देखकर वे प्रभावित हुए थे।
* सामाजिक कुरीतियों का विरोध करना उन्हे सही लगा होगा।
* कबीर का गृहस्थ और संन्यासी का मिला-जुला रूप उन्हे अपने अनुकूल लगा होगा।
* कबीर का आदर्शवादी रूप उन्हे भा गया होगा।

प्रश्न: गाँव का सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश अषाढ़ चढ़ते ही उल्लास से क्यों भर जाता है?

उत्तर: भारत एक कृषि प्रधान देश है। ग्रामीण जीवन कृषि पर आधारित होता है। आषाढ-मास का ग्रामीण जीवन में विशेष महत्व होता है। इस मास में खरीफ की फसल की बुआई होती है। आषाढ-मास में वर्षा का प्रारम्भ हो जाता है। आसमान काले-काले बादलों से घिर आता है और रिमझिम फुहारे पड़ने लगती है। तब किसानों की आँखों में फसल के सपने तैरने लगते हैं। किसान घर से निकल कर खेतो की ओर चल देते हैं। खेतो में धान की बुआई और रोपाई शुरू हो जाती है। औरतें कलेवा ले कर खेतो की मेढों पर बैठ जाती है। बच्चे पानी भरे खेतो में खेलने लगते हैं। इस प्रकार गाँव का सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश उल्लास से भर जाता है।

प्रश्न:- मोह और प्रेम में अन्तर होता है। भगत के जीवन की घटना पर इस कथन को सच सिद्ध करो।

उत्तर: मोह और प्रेम में निश्चित रूप से अंतर होता है। मोह में व्यक्ति अपने स्वार्थ की चिंता करता है। प्रेम में अपने प्रिय का हित-चिंतन करता है। — भगत के जीवन की निम्न घटना से इस कथन को सिद्ध कर सकते है:-

अपने पुत्र की मृत्यु के बाद यदि भगत अपनी पुत्रवधू को अपनी सेवा के लिए अपने पास रख लेते तो यह उनका मोह होता। परन्तु उन्होने पुत्रवधू के भविष्य की चिंता करते हुए उसके पुनर्विवाह का आदेश दिया तो यह उनके प्रेम को प्रकट करता है।

Scanned with CamScanner

संजीवनी पब्लिक स्कूल, विषय: हिन्दी
कक्षा: दसवीं, दत्त कार्य

पुस्तक: क्षितिज पद्य खण्ड / काव्य खण्ड पाठ: 3: कवि देव

कविता :- सवैया और कवित्त नोट: (पाठ 2 IInd term Syllabus में है।)

काव्यांशों पर आधारित प्रश्नोत्तर :-

1. सवैया :-

पाँयनि - - - - - - - - - - - - 'देव' सहाई ॥

प्रश्न: कृष्ण अपने पैरों तथा कमर में क्या आभूषण पहने हुए हैं? उनसे कैसी ध्वनि आ रही है?

उत्तर: कृष्ण ने अपने पाँवों में नूपुर (पाजेब) तथा कमर में घुँघरूओं वाली करधनी (कमर पर पहनने वाला आभूषण) पहन रखी है। इन आभूषणों से मधुर ध्वनि आ रही है।

प्रश्न: कृष्ण की वेशभूषा के बारे में क्या बताया गया है?

उत्तर: कृष्ण के साँवले शरीर पर पीताम्बर (पीले वस्त्र) शोभायमान है। उनकी छाती पर बनमाल शोभित हो रही है।

प्रश्न: श्री कृष्ण के मुख और नेत्रों की शोभा के बारे में बताइए।

उत्तर: श्री कृष्ण के माथे पर मुकुट शोभायमान है। उनके नेत्र बड़े-बड़े और चंचल हैं। उनके मुख रूपी चन्द्रमाँ पर चाँदनी रूपी मंद-मंद मुसकान बिखरी रहती है।

प्रश्न: 'जग-मंदिर-दीपक' किसे कहा गया है और क्यों? ब्रजदूलह कौन है?

उत्तर: यदि संसार एक मन्दिर है तो कृष्ण उस मन्दिर में जलते हुए दीपक के समान हैं। वे संसार में सबसे सुन्दर और उज्ज्वल होने के कारण जग-मन्दिर के दीपक प्रतीत होते हैं।

श्री कृष्ण ही ब्रजदूलह हैं। वे ब्रज प्रदेश के सबसे सुन्दर और प्रिय व्यक्ति हैं।

यहाँ रूपक अलंकार का प्रयोग हुआ है।

2. कवित्त

डार द्रुम - - - - - - - - - - चटकारी दै ॥

प्रश्न: प्रस्तुत कवित्त में किस ऋतु का वर्णन किया गया है? उसकी कल्पना किस रूप में की गई है?

उत्तर: प्रस्तुत कवित्त में बसंत ऋतु का वर्णन हुआ है। कवि ने उसकी कल्पना कामदेव के नवशिशु के रूप में की है।

Page 1

Scanned with CamScanner

प्रश्न: कवि ने किन-किन पक्षियों को किस-किस रूप में दिखाया है?
उत्तर: कवि ने मोर, तोता और कोयल पक्षियों का उल्लेख किया है। मोर और तोता अपनी मधुर आवाज़ में बसंत रूपी शिशु से बातें कर रहें हैं। कोयल उल्लासित हो कर ताली बजाती है और बसंत रूपी शिशु का पालना हिलाती है।
प्रश्न: कमल की कली ने कैसा रूप धारण किया हुआ है और वह क्या कर रही है?
उत्तर: कमल की कली ने लताओं की साड़ी अपने सिर पर डाल कर नायिका का रूप धारण किया हुआ है। और वह पराग के कणों को अपने हाथों में भर कर बसंत रूपी बालक की नज़र उतारने का प्रयास कर रही है।
प्रश्न: बसंत रूपी बालक को कौन किस प्रकार जगाता है?
उत्तर: बसंत रूपी बालक, जो कि कामदेव का पुत्र है उसे प्रातः काल रोज गुलाब चुटकी बजाकर जगाता है। प्रातःकाल गुलाब चटक कर खिलते हैं, जिससे बाग में गुलाब की बहार आ जाती है और चारों तरफ बसंत छा जाती है।

3 कवित्त

फटिक सिलानि - - — — — — — सो लागत चंद॥

प्रश्न: इस कवित्त में किस समय का वर्णन किया गया है?
उत्तर: इस कवित्त में शरद की पूर्णिमा की रात्री का वर्णन किया गया है, जब आसमान एकदम स्वच्छ है।
प्रश्न: कवि द्वारा कल्पित सुधा मंदिर की कल्पना को स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: कवि द्वारा कल्पित सुधा मन्दिर आकाश में फैली चाँदनी ही है। यही चाँदनी कवि को एक ऐसे मन्दिर के रूप में दिखाई देती है, जिसका निर्माण स्फटिक की उजली शिलाओं को काटकर हुआ है। यह अमृत मन्दिर है। इस मन्दिर का आँगन दूध के झाग के समान लगता है। मंदिर के चारो तरफ दही का समुद्र उमड़ता दिखाई देता है।
प्रश्न: 'इस मन्दिर में कोई भीति (दीवार) न दिखने' का क्या कारण है?
उत्तर: इस कल्पित सुधा मन्दिर में कोई दीवार दिखाई इस लिए नहीं देती, क्योंकि यह मन्दिर पारदर्शी है, जिससे आर-पार देखने में कोई बाधा उत्पन्न नहीं होती।
प्रश्न: इस कवित्त में वर्णित तरीका किस प्रकार की प्रतीत होती है?
उत्तर: इस कवित्त में वर्णित तरीका तारों के समान खड़ी झिलमिला रही है। जिससे मोतियों की चमक और मल्लिका के फूलों का मुकरंद स्पष्ट दिखाई देता है।

Scanned with CamScanner

प्रश्न: अंतिम दो पंक्तियों में निहित सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए :-
उत्तर: अंतिम दो पंक्तियों में आकाश को आरसी (दर्पण) के समान बताया गया है। उसमें चाँद खिला हुआ है। कवि ने चाँद में राधा की कल्पना की है। जिस प्रकार राधा अन्य गोपियों के मध्य अकेली चमकती प्रतीत होती है; वैसे ही चन्द्रमा अन्य तारों के मध्य अपनी अलग चमक बिखेर रहा है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न: दूसरे कवित्त के आधार पर स्पष्ट करें कि ऋतुराज बसंत के बाल-रूप का वर्णन परम्परागत बसंत वर्णन से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर: कवि देव ने ऋतुराज बसंत का बाल-रूप वर्णन परम्परागत बसंत से भिन्न इस प्रकार है-
परम्परागत बसंत वर्णन में प्रकृति के विभिन्न उपादानों, जैसे-फूल, पौधे, पवन आदि में आई नवीनता का वर्णन होता है। इसमें फूलों पर भवरों का मँडराना, ठंडी हवा का चलना, नायक-नायिका का मिलन, झूला-झूलना आदि का वर्णन होता है। इसमें विभिन्न पक्षियों का वर्णन भी दिखाई देता है।
कवि ने बसंत का वर्णन कामदेव के शिशु के रूप में किया किया है। यह बसंत शिशु वृक्षों की डालियों के पलने में झूला-झूलता है। इसे विभिन्न पक्षी बातें सुनाकर, ताली बजाकर, हिला-डुलाकर सुलाने का प्रयास करते हैं। कमल की कली इसमें नायिका का रूप धारण करके बसंत रूपी शिशु की नज़र उतारती प्रतीत होती है। पूरी प्रकृति शिशु की सेवा में उपस्थित है।
प्रश्न: 'प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै'- इस पंक्ति का भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: इस पंक्ति का भाव यह है बसंत ऋतु में गुलाब अपने यौवन पर होता है। वह प्रातः काल चटक-चटक कर खिलता है तब ऐसा प्रतीत होता है कि गुलाब बसंत रूपी शिशु को चुटकी बजाकर जगाता है। गुलाब के खिलने से बाग में बसंत की बहार आ जाती है।
प्रश्न: चाँदनी रात की सुन्दरता को कवि ने किन-किन रूपों में देखा है?
उत्तर:- चाँदनी रात की सुन्दरता को कवि ने निम्न रूपों मे देखा है:-
* कवि ने आकाश में फैली चाँदनी को धवल, पारदर्शी स्फटिक शिलाओं से बने अमृत-मन्दिर के रूप में देखा है।
* दही के छलकते समुद्र के रूप में देखा है।
* कवि ने चाँदनी को एक ऐसे आँगन के फर्श के रूप में देखा जिस पर सर्वत्र दूध का झाग फैला हुआ है।
* इस मन्दिर में कोई दीवार नहीं है, मन्दिर पारदर्शी है।
* आसमान स्वच्छ दर्पण के रूप में दिखाई दे रहा है, जिसमें

Scanned with CamScanner

चाँद राधा के प्रतिबिंब के रूप में दिखाई देता है।

प्रश्न: 'प्यारी राधिका को प्रतिबिम्ब सो लागत चंद' पंक्ति का अर्थ बता कर यह भी बताएँ कि इसमें कौन सा अलंकार है?

उत्तर: इस पंक्ति में राधा की सुन्दरता और उज्ज्वलता को अपरंपार बताया गया है। यहाँ तक कि उपमान चाँद भी उपमेय राधा के सामने तुच्छ और क्षीण है वह केवल उसकी परछाई-सा दिखाई देता है।

इस पंक्ति में व्यतिरेक अलंकार है। व्यतिरेक अलंकार में उपमान को उपमेय के सामने तुच्छ दिखाया जाता है।

स्वयं अभ्यास प्रश्न:-

1. कवि ने 'श्री ब्रजदूलह किसे कहा है? और उन्हे संसार रूपी मन्दिर का दीपक क्यों कहा गया है?
2. कवि देव ने कृष्ण के रूप सौन्दर्य के चित्रण में वस्त्रों एवम आभूषणों का प्रयोग किस प्रकार किया है? स्पष्ट कीजिए।

Page-4

* * * *

Scanned with CamScanner